229

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीनारायणकवच

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः॥

श्रीनारायणकवच

न्यास

सर्वप्रथम श्रीगणेशजी तथा भगवान् नारायणको नमस्कार करके नीचे लिखे प्रकारसे न्यास करे—

अङ्गन्यासः

ॐ ॐ नमः—पादयोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ—इन दोनोंको मिलाकर दोनों पैरोंका स्पर्श करे)।

ॐ नं नमः—जानुनोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ—इन दोनोंको मिलाकर दोनों घुटनोंका स्पर्श करे)।

ॐ मों नमः—ऊर्वोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ—इन दोनोंको मिलाकर दोनों पैरोंकी जाँघका स्पर्श करे)।

ॐ नां नमः—उदरे (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ—इन दोनोंको मिलाकर पेटका स्पर्श करे)।

ॐ रां नमः—हृदि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनीसे हृदयका स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः—उरसि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनीसे छातीका स्पर्श करे)।

ॐ णां नमः—मुखे (तर्जनी-अँगूठेके संयोगसे मुखका स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः—शिरसि (तर्जनी-मध्यमाके संयोगसे सिरका स्पर्श करे)।

करन्यासः

ॐ ॐ नमः—दक्षिणतर्जन्याम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिनी तर्जनीके सिरेका स्पर्श करे)।

ॐ नं नमः—दक्षिणमध्यमायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी मध्यमा अँगुलीका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ मों नमः—दक्षिणानामिकायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी अनामिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ भं नमः—दक्षिणकनिष्ठिकायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी कनिष्ठिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ गं नमः—वामकनिष्ठिकायाम् (बायें अँगूठेसे बायें हाथकी कनिष्ठिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ वं नमः—वामानामिकायाम् (बायें अँगूठेसे बायें हाथकी अनामिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ तें नमः—वाममध्यमायाम् (बायें अँगूठेसे बायें हाथकी मध्यमाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ वां नमः—वामतर्जन्याम् (बायें अँगूठेसे बायें हाथकी तर्जनीका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ सुं नमः—दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि (दाहिने हाथकी चारों अँगुलियोंसे दाहिने हाथके अँगूठेका ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ दें नमः—दक्षिणाङ्गुष्ठाधःपर्वणि (दाहिने हाथकी चारों अँगुलियोंसे दाहिने हाथके अँगूठेका नीचेवाला पोर छूए)।

ॐ वां नमः—वामाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि (बायें हाथकी चारों अँगुलियोंसे बायें अँगूठेके ऊपरवाला पोर छूए)।

ॐ यं नमः—वामाङ्गुष्ठाधःपर्वणि (बायें हाथकी चारों अँगुलियोंसे बायें हाथके अँगूठेका नीचेवाला पोर छूए)।

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ ॐ नमः—हृदये (तर्जनी-मध्यमा एवं अनामिकासे हृदयका स्पर्श करे)।

ॐ विं नमः—मूर्धनि (तर्जनी-मध्यमाके संयोगसे सिरका स्पर्श करे)।

ॐ षं नमः—भ्रुवोर्मध्ये (तर्जनी-मध्यमासे दोनों भौंहोंका स्पर्श करे)।

ॐ णं नमः—शिखायाम् (अँगूठेसे शिखाका स्पर्श करे)।

ॐ वें नमः—नेत्रयोः (तर्जनी-मध्यमासे दोनों नेत्रोंका स्पर्श करे)।

ॐ नं नमः—सर्वसंधिषु (तर्जनी-मध्यमा और अनामिकासे शरीरके सभी जोड़ों—जैसे कंधा, केहुनी, घुटना आदिका स्पर्श करे)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—प्राच्याम् (पूर्वकी ओर चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—आग्नेय्याम् (अग्निकोणमें चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—दक्षिणस्याम् (दक्षिणकी ओर चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—नैर्ॠत्ये (नैर्ॠत्यकोणमें चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—प्रतीच्याम् (पश्चिमकी ओर चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—वायव्ये (वायुकोणमें चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—उदीच्याम् (उत्तरकी ओर चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—ऐशान्याम् (ईशानकोणमें चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—ऊर्ध्वायाम् (ऊपरकी ओर चुटकी बजाये)।
ॐ मः अस्त्राय फट्—अधरायाम् (नीचेकी ओर चुटकी बजाये)।

॥ श्रीहरिः ॥

अथ श्रीनारायणकवच*

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्त्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्॥ १ ॥
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे॥ २ ॥

---

*राजा परीक्षित्ने पूछा—*भगवन्! देवराज इन्द्रने जिससे सुरक्षित होकर शत्रुओंकी चतुरंगिणी सेनाको खेल-खेलमें—अनायास ही जीतकर त्रिलोकीकी राजलक्ष्मीका उपभोग किया, आप उस नारायणकवचको मुझे सुनाइये और यह भी बतलाइये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमिमें किस प्रकार आक्रमणकारी शत्रुओंपर विजय प्राप्त की॥ १-२ ॥

---

*श्रीमद्भागवत स्कन्ध ६, अ० ८।

श्रीशुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु॥ ३॥

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः।
कृतस्वाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः॥ ४॥

श्रीशुकदेवजीने कहा—परीक्षित्! जब देवताओंने विश्वरूपको पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्रके प्रश्न करनेपर विश्वरूपने उन्हें नारायणकवचका उपदेश किया। तुम एकाग्रचित्तसे उसका श्रवण करो॥ ३॥

विश्वरूपने कहा—देवराज इन्द्र! भयका अवसर उपस्थित होनेपर नारायणकवच धारण करके अपने शरीरकी रक्षा कर लेनी चाहिये। उसकी विधि यह है कि पहले हाथ-पैर धोकर आचमन

नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि॥ ५॥
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोङ्कारादीनि विन्यसेत्।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा॥ ६॥

करे, फिर हाथमें कुशकी पवित्री धारण करके उत्तर मुँह बैठ जाय। इसके बाद कवचधारणपर्यन्त और कुछ न बोलनेका निश्चय करके पवित्रतासे '**ॐ नमो नारायणाय**' और '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**'—इन मन्त्रोंके द्वारा हृदयादि अंगन्यास तथा अंगुष्ठादि करन्यास करे। पहले '**ॐ नमो नारायणाय**' इस अष्टाक्षर मन्त्रके ॐ आदि आठ अक्षरोंका क्रमशः पैरों, घुटनों, जाँघों, पेट, हृदय, वक्षःस्थल, मुख और सिरमें न्यास करे। अथवा पूर्वोक्त मन्त्रके यकारसे लेकर ॐकारपर्यन्त आठ अक्षरोंका सिरसे आरम्भ करके उन्हीं आठ अंगोंमें विपरीत क्रमसे न्यास करे॥ ४—६॥

करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादियकारान्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु ॥ ७ ॥
न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत्॥ ८ ॥
वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसन्धिषु।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः॥ ९ ॥

तदनन्तर '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**'—इस द्वादशाक्षर-मन्त्रके ॐ आदि बारह अक्षरोंका दायीं तर्जनीसे बायीं तर्जनीतक दोनों हाथकी आठ अँगुलियों और दोनों अँगूठोंकी दो-दो गाँठोंमें न्यास करे॥ ७॥ फिर '**ॐ विष्णवे नमः**' इस मन्त्रके पहले अक्षर 'ॐ'का हृदयमें, 'वि'का ब्रह्मरन्ध्रमें, 'ष'का भौंहोंके बीचमें, 'ण'का चोटीमें, 'वे'का दोनों नेत्रोंमें और 'न' का शरीरकी सब गाँठोंमें न्यास करे। तदनन्तर '**ॐ मः अस्त्राय फट्**' कहकर दिग्बन्ध करे।,

सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नम इति॥ १०॥
आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत्॥ ११॥
ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे।

इस प्रकार न्यास करनेसे इस विधिको जाननेवाला पुरुष मन्त्रस्वरूप हो जाता है॥ ८—१०॥ इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्यसे परिपूर्ण इष्टदेव भगवान्का ध्यान करे और अपनेको भी तद्रूप ही चिन्तन करे। तत्पश्चात् विद्या, तेज और तप:स्वरूप इस कवचका पाठ करे॥ ११॥ भगवान् श्रीहरि गरुड़जीकी पीठपर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथोंमें शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा,

दरारिचर्मासिगदेषुचाप-
पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ॥ १२ ॥
जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति-
र्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात्।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्
त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ॥ १३ ॥

बाण, धनुष और पाश (फंदा)धारण किये हुए हैं। वे ही ॐकारस्वरूप प्रभु सब प्रकारसे सब ओरसे मेरी रक्षा करें॥ १२॥ मत्स्यमूर्ति भगवान् जलके भीतर जलजन्तुओंसे और वरुणके पाशसे मेरी रक्षा करें। मायासे ब्रह्मचारीका रूप धारण करनेवाले वामनभगवान् स्थलपर और विश्वरूप श्रीत्रिविक्रमभगवान् आकाशमें मेरी रक्षा करें॥ १३॥

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः
पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः ।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं
दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ॥ १४ ॥
रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः
स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः ।

जिनके घोर अट्टहास करनेपर सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्य-पत्नियोंके गर्भ गिर गये थे, वे दैत्ययूथपतियोंके शत्रु भगवान् नृसिंह किले, जंगल, रणभूमि आदि विकट स्थानोंमें मेरी रक्षा करें॥ १४॥ अपनी दाढ़ोंपर पृथ्वीको उठा लेनेवाले यज्ञमूर्ति वराहभगवान् मार्गमें, परशुरामजी पर्वतोंके शिखरोंपर और लक्ष्मणजीके सहित भरतके बड़े

रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे
सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्॥ १५ ॥
मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा-
न्नारायणः पातु नरश्च हासात्।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः
पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात्॥ १६ ॥

भाई भगवान् रामचन्द्र प्रवासके समय मेरी रक्षा करें॥ १५॥ भगवान् नारायण मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों और सब प्रकारके प्रमादोंसे मेरी रक्षा करें। ऋषिश्रेष्ठ नर गर्वसे, योगेश्वर भगवान् दत्तात्रेय योगके विघ्नोंसे और त्रिगुणाधिपति भगवान् कपिल कर्मबन्धनोंसे मेरी रक्षा करें॥ १६॥

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-
द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात्
कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात्॥ १७॥
धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्
द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।

परमर्षि सनत्कुमार कामदेवसे, हयग्रीवभगवान् मार्गमें चलते समय देवमूर्तियोंको नमस्कार आदि न करनेके अपराधसे, देवर्षि नारद सेवापराधोंसे और भगवान् कच्छप सब प्रकारके नरकोंसे मेरी रक्षा करें॥ १७॥ भगवान् धनवन्तरि कुपथ्यसे, जितेन्द्रिय भगवान् ऋषभदेव सुख-दुःख आदि भयदायक द्वन्द्वोंसे, यज्ञभगवान् लोकापवादसे, बलरामजी मनुष्यकृत कष्टोंसे और श्रीशेषजी

यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद्
बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥ १८ ॥
द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद्
बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु
धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥ १९ ॥

क्रोधवशनामक सर्पोंके गणसे मेरी रक्षा करें॥ १८॥ भगवान् श्रीकृष्णद्वैपायन व्यासजी अज्ञानसे तथा बुद्धदेव पाखण्डियोंसे और प्रमादसे मेरी रक्षा करें। धर्म-रक्षाके लिये महान् अवतार धारण करनेवाले भगवान् कल्कि पापबहुल कलिकालके दोषोंसे मेरी रक्षा करें॥ १९॥

मां केशवो गदया प्रातरव्याद्
गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्ति-
र्मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः॥ २०॥
देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा
सायं त्रिधामावतु माधवो माम्।

प्रातःकाल भगवान् केशव अपनी गदा लेकर, कुछ दिन चढ़ जानेपर भगवान् गोविन्द अपनी बाँसुरी लेकर, दोपहरके पहले भगवान् नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहरको भगवान् विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें॥ २०॥ तीसरे पहरमें भगवान् मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकालमें ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव, सूर्यास्तके बाद हृषीकेश,

दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे
निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥ २१ ॥
श्रीवत्सधामापररात्र ईशः
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः ।
दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं प्रभाते
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥ २२ ॥

अर्धरात्रिके पूर्व तथा अर्धरात्रिके समय अकेले भगवान् पद्मनाभ मेरी रक्षा करें॥ २१॥ रात्रिके पिछले पहरमें श्रीवत्सलांछन श्रीहरि, उषाकालमें खड्गधारी भगवान् जनार्दन, सूर्योदयसे पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण संध्याओंमें कालमूर्ति भगवान् विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें॥ २२॥

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि
भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाशु
कक्षं यथा वातसखो हुताशः॥ २३॥
गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे
निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि।

सुदर्शन! आपका आकार चक्र (रथके पहिये)-की तरह है। आपके किनारेका भाग प्रलयकालीन अग्निके समान अत्यन्त तीव्र है। आप भगवान्‌की प्रेरणासे सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे आग वायुकी सहायतासे सूखे घास-फूसको जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रुसेनाको शीघ्र-से-शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये॥ २३॥ कौमोदकी गदा! आपसे छूटनेवाली चिनगारियोंका स्पर्श वज्रके समान असह्य है। आप भगवान् अजितकी प्रिया हैं और मैं उनका सेवक हूँ।

कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो-
भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन्॥ २४॥
त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ-
पिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो
भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन्॥ २५॥

इसलिये आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहोंको अभी कुचल डालिये, कुचल डालिये तथा मेरे शत्रुओंको चूर-चूर कर दीजिये॥ २४॥ शंखश्रेष्ठ! आप भगवान् श्रीकृष्णके फूँकनेसे भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओंका दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियोंको यहाँसे झटपट भगा दीजिये॥ २५॥

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य-
मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय
द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम्॥ २६॥
यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा॥ २७॥

भगवान्‌की श्रेष्ठ तलवार! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है। आप भगवान्‌की प्रेरणासे मेरे शत्रुओंको छिन्न-भिन्न कर दीजिये। भगवान्‌की प्यारी ढाल! आपमें सैकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं। आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओंकी आँखें बंद कर दीजिये और उन्हें सदाके लिये अन्धा बना दीजिये॥ २६॥ सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगनेवाले जन्तु, दाढ़ोंवाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियोंसे हमें जो-जो भय हों और

सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात्।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयःप्रतीपकाः॥ २८॥
गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः॥ २९॥
सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः।
बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः॥ ३०॥

जो-जो हमारे मंगलके विरोधी हों—वे सभी भगवान्‌के नाम, रूप तथा आयुधोंका कीर्तन करनेसे तत्काल नष्ट हो जायँ॥ २७-२८॥ बृहद्, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रोंसे जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान् गरुड़ और विष्वक्सेनजी अपने नामोच्चारणके प्रभावसे हमें सब प्रकारकी विपत्तियोंसे बचायें॥ २९॥ श्रीहरिके नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय,मन और प्राणोंको सब प्रकारकी आपत्तियोंसे बचायें॥ ३०॥

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः॥ ३१ ॥
यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्।
भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया॥ ३२ ॥
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः॥ ३३ ॥

जितना भी कार्य अथवा कारणरूप जगत् है, वह वास्तवमें भगवान् ही हैं—इस सत्यके प्रभावसे हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जायँ॥ ३१ ॥ जो लोग ब्रह्म और आत्माकी एकताका अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टिमें भगवान्का स्वरूप समस्त विकल्पों—भेदोंसे रहित है, फिर भी वे अपनी माया-शक्तिके द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियोंको धारण करते हैं। यह बात निश्चितरूपसे सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान् श्रीहरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपोंसे हमारी रक्षा करें॥ ३२-३३ ॥

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता-
दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः।
प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन
स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः॥ ३४॥
मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान्॥ ३५॥

जो अपने भयंकर अट्टहाससे सब लोगोंके भयको भगा देते हैं और अपने तेजसे सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान् नृसिंह दिशा-विदिशामें, नीचे-ऊपर, बाहर-भीतर—सब ओर हमारी रक्षा करें॥ ३४॥ देवराज इन्द्र! मैंने तुम्हें यह नारायणकवच सुना दिया। इस कवचसे तुम अपनेको सुरक्षित कर लो। बस, फिर तुम अनायास ही सब दैत्य-यूथपतियोंको जीत लोगे॥ ३५॥

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते॥ ३६॥
न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित्॥ ३७॥
इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः।
योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरुधन्वनि॥ ३८॥

इस नारायणकवचको धारण करनेवाला पुरुष जिसको भी अपने नेत्रोंसे देख लेता अथवा पैरसे छू देता है, वह तत्काल समस्त भयोंसे मुक्त हो जाता है॥ ३६॥ जो इस वैष्णवी विद्याको धारण कर लेता है, उसे राजा, डाकू, प्रेत, पिशाचादि और बाघ आदि हिंसक जीवोंसे कभी किसी प्रकारका भय नहीं होता॥ ३७॥ देवराज! प्राचीन कालकी बात है, एक कौशिकगोत्री ब्राह्मणने इस विद्याको धारण करके योगधारणासे अपना शरीर मरुभूमिमें त्याग दिया॥ ३८॥

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः॥ ३९॥
गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः।
स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात्॥ ४०॥

जहाँ उस ब्राह्मणका शरीर पड़ा था, उसके ऊपरसे एक दिन गन्धर्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियोंके साथ विमानपर बैठकर निकले॥ ३९॥ वहाँ आते ही वे नीचेकी ओर सिर किये विमानसहित आकाशसे पृथ्वीपर गिर पड़े। इस घटनासे उनके आश्चर्यकी सीमा न रही। जब उन्हें वालखिल्य मुनियोंने बतलाया कि यह नारायणकवच धारण करनेका प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मणदेवताकी हड्डियोंको ले जाकर पूर्ववाहिनी सरस्वती नदीमें प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोकको गये॥ ४०॥

श्रीशुक उवाच

य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात्॥ ४१॥
एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्॥ ४२॥

इति श्रीनारायणकवचं सम्पूर्णम्।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं—परीक्षित्! जो पुरुष इस नारायणकवचको समयपर सुनता है और जो आदरपूर्वक इसे धारण करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदरसे झुक जाते हैं और वह सब प्रकारके भयोंसे मुक्त हो जाता है॥ ४१॥ परीक्षित्! शतक्रतु इन्द्रने आचार्य विश्वरूपजीसे यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमिमें असुरोंको जीत लिया और वे त्रैलोक्यलक्ष्मीका उपभोग करने लगे॥ ४२॥

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीनारायणकी महत्ता एवं व्यापकता

यत्पादाब्जनखोदकं त्रिजगतां पापौघविध्वंसनं
यन्नामामृतपूरकं च पिबतां संसारसंतारकम्।
पाषाणोऽपि यदङ्घ्रिपद्मरजसा शापान्मुनेर्मोचित
आर्तत्राणपरायणः स भगवान् नारायणो मे गतिः ॥

'जिनके चरणकमलोंके नखोंकी धोवन श्रीगंगाजी त्रिलोकीके पापसमूहको ध्वंस करनेवाली हैं, जिनका नामामृतसमूह पान करनेवालोंको संसार-सागरसे पार करनेवाला है तथा जिनके पादपद्मोंकी रजसे पाषाण भी मुनिशापसे मुक्त हो गया, वे दीनरक्षक भगवान् नारायण ही मेरे एकमात्र गति हैं।'

नारायणपरा वेदा देवा नारायणाङ्गजाः।
नारायणपरा लोका नारायणपरा मखाः॥
नारायणपरो योगो नारायणपरं तपः।
नारायणपरं ज्ञानं नारायणपरा गतिः॥

(श्रीमद्भा० २।५।१५-१६)

'वेद नारायणके परायण हैं। देवता भी नारायणके ही अंगोंमें कल्पित हुए हैं और समस्त यज्ञ भी नारायणकी प्रसन्नताके लिये ही हैं और उनसे जिन लोकोंकी प्राप्ति होती है, वे भी नारायणमें ही कल्पित हैं। सब प्रकारके योग भी नारायणकी प्राप्तिके ही हेतु हैं। सारी तपस्याएँ नारायणकी ओर ही ले जानेवाली हैं, ज्ञानके द्वारा भी नारायण ही जाने जाते हैं। समस्त साध्य और साधनोंका पर्यवसान भगवान् नारायणमें ही है।'

॥ श्रीहरि: ॥

गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित कुछ साधन-भजन-सम्बन्धी पुस्तकें

कोड	पुस्तक
592	**नित्यकर्म-पूजाप्रकाश**
1627	**रुद्राष्टाध्यायी**—सानुवाद
1417	**शिवस्तोत्ररत्नाकर**
610	**व्रत-परिचय**
1162	**एकादशी-व्रतका माहात्म्य**
1136	**वैशाख-कार्तिक-माघमास-माहात्म्य**
1588	**माघमासका माहात्म्य**
1367	**श्रीसत्यनारायण-व्रतकथा**
052	**स्तोत्ररत्नावली**—सानुवाद
509	**सूक्ति-सुधाकर**
211	**आदित्यहृदयस्तोत्रम्**
224	**श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्रम्**
231	**रामरक्षास्तोत्रम्**
495	**दत्तात्रेय-वज्रकवच**—सानुवाद
054	**भजन-संग्रह**

कोड	पुस्तक	कोड	पुस्तक
140	**श्रीरामकृष्णलीला-भजनावली**	222	**हरेरामभजन—**१४ माला
142	**चेतावनी-पद-संग्रह** (दोनों भाग)	225	**गजेन्द्रमोक्ष**—सानुवाद, हिन्दी पद्य, भाषानुवाद
144	**भजनामृत—**६७ भजनोंका संग्रह	139	**नित्यकर्म-प्रयोग**
1355	**सचित्र-स्तुति-संग्रह**	524	**ब्रह्मचर्य और संध्या-गायत्री**
1214	**मानस-स्तुति-संग्रह**	1471	**संध्या, संध्या-गायत्रीका महत्त्व और ब्रह्मचर्य**
1344	**सचित्र-आरती-संग्रह**	210	**संध्योपासनविधि एवं तर्पण-बलिवैश्वदेवविधि—** मन्त्रानुवादसहित
1591	**आरती-संग्रह—**मोटा टाइप	614	**संध्या**
807	**सचित्र आरतियाँ**		
208	**सीतारामभजन**		
221	**हरेरामभजन—** दो माला (गुटका)		